वर्षः 4। पत्रिका अंकः 3 | छःठा संस्करण | जुलाई 2022

नयी शिक्षा नीति 2020: जेंडर का समावेश

जुलाई 2020 में केंद्रीय सरकार द्वारा एक नई शिक्षा नीति की घोषणा की गई, जो स्वतंत्र भारत की तीसरी शिक्षा नीति है, जो 34 साल बाद बदली गई।

बदलते वैश्विक परिवेश में ज्ञानाधारित अर्थव्यवस्था की आवश्यकताओं की पूर्ति करने तथा वैश्विक स्तर पर भारतीय शिक्षा व्यवस्था की पहुंच सुनिश्चित करने के लिए शिक्षा नीति में परिवर्तन आवश्यक था। इस शिक्षा नीति के द्वारा 2030 तक सभी के लिए समावेशी एवं समान गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने और जीवन पर्यंत शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा देने का लक्ष्य है।

एक सभ्य समाज का निर्माण उस देश के शिक्षित नागरिकों द्वारा होता है और महिला इस कड़ी का अहम हिस्सा है। शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक स्त्री का मूल अधिकार है जो देश की प्रगति, उन्नति एवं विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। आज महिला शिक्षा के क्षेत्र में बहुत आगे निकल चुकी है। शुरवात से ही बच्चों के साथ जेंडर आधारित शिक्षा देने की एक पहल की जा रही है। JCERT के तत्वावधान में पोजिशन पेपर में जेंडर शिक्षा को तैयार करने में ICRW की बहुत ही अहम् भूमिका रही है।

स्कूली शिक्षा में जेंडर का बहुत महत्व है। शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण पहनावा सभी क्षेत्र में जेंडर संतुलित नज़रिए एवं सोच को लाने की आवश्यकता है। किशोरियों की शिक्षा के लिए समय–समय पर अनेक प्रयास किए गए हैं, योजनाए बनाई गई और सफल भी हुई है। उसके बावजूद भी महिलाएं जो हमारी कुल जनसंख्या का आधा हिस्सा मानी जाती है वह अभी भी अशिक्षित है।

नई शिक्षा नीति 2020 किशोरियों की शिक्षा एवं जेंडर शिक्षा को बढ़ावा देती है। इसमें उन समस्याओं और बाधाओं की तरफ ध्यान दिया गया है, जो किशोरियों की शिक्षा के रास्ते में बाधा बनती हैं। अनेक स्तर पर इसमे किशोरियों और महिलाओं के लिए विशेष प्रावधान रखे गए हैं। शिक्षा की शुरुआत होती है विद्यालय स्तर से, अतः इस नीति में दो चीजें जो बहुत महत्वपूर्ण है वह है विद्यालयों में किशोरियों की सुरक्षा तथा ऐसे प्रावधान और योजनाएं जो छात्राओं को विद्यालय से जोड़े रखते हैं, उन्हें अवसर देते हैं।

विद्यालय स्तर पर किशोरियों के लिए नई शिक्षा नीति 2020 में प्रावधान–

- जहां विद्यालय अधिक दूरी पर है, ग्रामीण अंचलों, पहाड़ी और दुर्गम क्षेत्रों में निशुल्क छात्रावासों का निर्माण और बालिकाओं की सुरक्षा के लिए उपयुक्त व्यवस्था।
- भारत सरकार की योजना कस्तूरबा गांधी विद्यालय का सशक्तिकरण। सामाजिक आर्थिक रूप से पिछड़े समूहों की किशोरियों का नामांकन बढ़ने हेतु गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के साथ विद्यालयों में 12 वीं स्तर तक विस्तार।
- सामाजिक रूप से वंचित तथा अल्प प्रतिनिधित्व समूह की महिलाओं एवं बालिकाओं के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की व्यवस्था। इन पर विशेष ध्यान केंद्रित करके नीति एवं योजनाएं बनाई जाएंगी।
- किशोरियों की शिक्षा में भागीदारी बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति में जेन्डर समावेशी (इन्क्लूशन) फंड की व्यवस्था। (अध्याय 6).
- जेंडर समावेशी कोष राज्यों के लिए उपलब्ध करवाया जाएगा, जिससे उनको ऐसी नीतियों, योजनाओं, कार्यक्रमों को लागू करने में सहायता मिलेगी जिससे किशोरियों को विद्यालय परिसर में अधिक सुरक्षापूर्ण और स्वस्थ वातावरण मिल सके। जैसे परिसर में किशोरियों के लिए शौचालय, स्वच्छता और सेनिटेशन से संबंधित अन्य सुविधाएं, स्कूल आने जाने के लिए साइकिल, फीस के लिए अभिभावकों को सशर्त नगद हस्तांतरण, ताकि पैसे के कारण उन्हें स्कूल न छोड़ना पड़े।
- विद्यालयों में सकारात्मक वातावरण, सुविधाएं विशेषकर स्वच्छता, शौचालय सम्बंधित एवं सह–शिक्षा विद्यालयों में अलग शौचालय आदि सुविधाओं एवं सुरक्षा का ध्यान रखा जाए।
- कार्यस्थल पर सुरक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण के प्रति सभी शिक्षक जेंडर संवेदनशील होंगे तथा विद्यालय में समावेशी एवं संवेदनशील संस्कृति का निर्माण किया जाए।
- स्कूल में नामांकित सभी बच्चे विशेषकर किशोरियों के साथ जेंडर भेदभाव एवं अन्य मुद्दों जैसे उत्पीड़न तथा उनके अधिकारों के खिलाफ किसी भी तरह के उल्लंघन पर कुशलतापूर्वक कार्यवाही की जाएगी।
- बालिकाओं और ट्रांसजेंडर छात्रों के लिए जेंडर समावेशी निधि का गठन एक नया कदम है। राज्यों के लिए जेंडर समावेशी कोष उपलब्ध करवाया जाएगा।
- उच्च शिक्षण संस्थानों की प्रवेश प्रक्रिया में जेंडर गैर बराबरी को बढ़ावा दिया जाएगा।
- उच्च शिक्षण संस्थाओं के सभी पहलुओं पर सदस्यों, परामर्शदाताओं और विद्यार्थियों को जेंडर और जेंडर पहचान के प्रति संवेदनशील और समावेशित किया जाएगा।

शिक्षा के सभी स्तरों में जेंडर संतुलन, सामाजिक व आर्थिक रूप से वंचित समूहों की महिलाओं की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, शिक्षण परिसरों में महिलाओं की सुरक्षा, अधिक छात्रवृत्तियां आदि के प्रति यह नीति जागरूक और संवेदनशील है। आशा करते हैं कि यह नई शिक्षा नीति 2020 हमारी आकांक्षाओं पर खरी उतरे। जेंडर समावेशी शिक्षा सभी को दी जाये, साथ ही सफल और सही दिशा में इसका क्रियान्वयन हो।

"29 जुलाई को सरकार ने नई शिक्षा नीति 2020 (New Education Policy) की घोषणा की है। नई शिक्षा नीति में बेटियों का जिक्र तो है, लेकिन बेटी कैसे पढ़ेगी, कैसे बढ़ेगी, कैसे स्कुल छोड़ चुकी लड़कियां वापस आएंगी, इसका रोडमैप बनाने की आवश्यकता है। जेंडर के position Paper में ICRW का सहयोग मिला जो सराहनीय है। बहुत ही आवश्यक है की हम विद्यालय में लैंगिक समानता (Gender Equality) पर खुल कर बात करें।"

अभिनव कुमार,
राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी, क्वालिटी एजुकेशन
झारखंड शिक्षा परियोजना परिषद

प्रिय पाठकों,

नमस्ते!

अत्यंत प्रसन्नता के साथ, मैं आपके लिए उमंगवाणी का छठा संस्करण प्रस्तुत कर रहा हूँ। जब एक माँ कहती है, 'मैं चाहती हूँ कि मेरी बेटी आसमान को छुए और मैं उसकी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए हर संभव कोशिश करूँगी' यह मेरे विश्वास को बढ़ावा देता है कि, किशोरियों के 'बाल/जल्दी विवाह' की प्रतिगामी सामाजिक प्रथा को समाप्त करने के लिए हम सही रास्ते पर हैं।

उमंग कार्यक्रम इन प्रतिगामी मानदंडों को बदलने के लिए, सामुदायिक नेताओं के रूप में माताओं की क्षमता को पह. चानता है। पारंपरिक रूप से महिलाओं और लड़कियों को अपनी पूरी क्षमता का एहसास करने और किसी भी प्रकार की हिंसा से मुक्त स्वस्थ जीवन जीने से वंचित रखा गया है। जे.एस.एल.पी.एस. के साथ साझेदारी में काम करते हुए, स्वयं सहायता समूहों (एस.एच.जी) का नेटवर्क समुदायों, परिवारों और व्यक्तियों तक व्यापक और गहरी पहुंच का अवसर प्रदान करता है। उमंग कार्यक्रम की गोड्डा और जामताड़ा जिलों में 16600 से अधिक एसएचजी तक पहुंच है। 1400 सक्रिय महिलाएं समय–समय पर विवेक और चिंतन सत्र आयोजित कर रही हैं। ये सत्र माताओं से बेटियों तक सशक्तिकरण के प्रसारण को बढ़ावा देते हैं, ताकि बेटियां बिना किसी बाधा के अपनी आकांक्षाओं की प्राप्ति कर सकें। हमारी पहल के परिणामस्वरूप महिलाएं अपने परिवार के सदस्यों के साथ बातचीत कर रही हैं और लड़कियों के लिए उच्च शिक्षा पूरी करने के लिए समय और संसाधन जुटा रही हैं। जुलाई 2002 से, हम गोड्डा सदर और नाला के 2 ब्लॉकों में परामर्श और रेफरल केंद्र (किशोरी कोर्नर) शुरू करने जा रहे हैं, जहां किशोर लड़कियां शिक्षा, कैरियर, स्वास्थ्य और अन्य जीवन–कौशल से संबंधित मामलों के लिए सेवाएं ले सकती हैं। यदि आप एस.एच.जी सदस्य या किशोरी लड़की के माता–पिता हैं, तो इन ब्लॉकों में, अपने पड़ोस में किसी भी जे.एस.एल.पी.एस. सक्रिय महिला या एस.एच.जी सदस्य से संपर्क करें और अपने पड़ोस में इन सेवाओं का लाभ उठाएं।

उमंगवाणी हमें उमंग के परिवार, दोस्तों और समर्थकों को पहचानने और धन्यवाद देने का अवसर देती है जो महिलाओं और लड़कियों को सशक्त बनाने के लिए हमारे साथ हैं। इस संस्करण के माध्यम से, आप पिछले 6 महीनों में हमारी उपलब्धियों की एक झलक देखेंगे और आनंद लेंगे। हम आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव प्राप्त करने के लिए तत्पर हैं।

आपका आभारी

इंद्रजीत चौधरी
सी.ई.ओ. तथा कन्ट्री डायरेक्टर
प्रोजेक्ट कंसर्न इंटरनेशनल

बेटियों की बातें ... बेटियों की आवाज ... अब दोहराएगा समाज

दुनिया के मशहूर नाट्य व्यक्तित्व श्री अगस्तो बोआल ने कहा था ''**हम सभी को यह पता लगाने के लिए थिएटर करना चाहिए कि हम कौन हैं और हम कौन बन सकते हैं**''

उमंग परियोजना का मानना हैं, समाज के कई सारे प्रतिबंधों के बावजुद अगर लड़कियाँ ठान ले की उन्हें आगे बढ़ना है तो शायद ही कोई चुनौती उनके लिए चुनौती रह जाएगी, और नाटक ही एक ऐसा माध्यम है जहाँ बाकि सभी अन्य कला माध्यमों के साथ साथ टीम वर्क, आत्मविश्वास और अपने बातों को अनेकों के सामने रखने का तरीका समेत संचार के सभी उपकरणों का प्रयोग किया जाता है, और इसी सोच को वास्तव रूप देते हुए ही आयोजित हुआ एक अनोखा 5 दिवसीय नाटक आधारित संचार और व्यक्तित्व विकास कार्यशाला। जिसका शुभारम्भ पिछले साल दिसंबर में हुआ था और इसी क्रम में आगे बढ़ते हुए अप्रैल से कार्यशाला का दूसरा चरण शुरू हुआ जिसमे कुल 27 गावों से लगभग 160 प्रतिभागिओं ने हिस्सा लिया। प्रशिक्षण में किशोरियों ने बहुत ही उत्साहपूर्वक भाग तो लिया लेकिन शुरू में चुनौतियां भी कम नहीं आयी, किशोरियों के लिए अपने परिवार को छोड़ 5 दिन तक चलनेवाले इस आवासीय कार्यशाला में रहना, साथ में नाटक और बाकि माध्यमों में प्रशिक्षण लेकर उसे समुदाय के लोगों के सामने प्रस्तुत करना, कोई आम बात नहीं थी। फिर भी उमंग के अग्रणी कार्यकर्ताओं का आंतरिक पहल, माता पिता और किशोरियों के साथ उनका इस कार्यशाला को लेकर लगातार बातचीत और परिवारों के साथ बनाये हुए सम्बन्ध इस चुनौती को पार करने में मददगार साबित हुआ और फलस्वरूप कार्यशाला में 204 किशोरियों और 13 किशोरों ने सफलतापूर्व योगदान दिया।

कार्यशाला में नाट्यकला के साथ साथ व्यतित्व विकास, साइबर सुरक्षा, प्रभावी संचार कौशल, व्यक्तिगत सुरक्षा शैली जैसे कई विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया। कार्यशाला के दौरान प्रतिभागियों द्वारा किशोरियों के साथ होने वाले भेदभाव, बाल विवाह जैसे मुद्दों पर नाट्य प्रस्तुति का निर्माण और मंचन किया गया, उल्लेखनीय यह भी है की, इन सभी नाट्य प्रस्तुति को किशोर और किशोरी द्वारा लिखे गए कहानी और अनुभवों से ही तैयार किया गया।

कार्यशाला में भाग लेने वाले किशोरों एवं किशोरियों के लिए यह एक अलग ही अनुभव था, जहाँ समाज में लड़कियों को सिर्फ शादी और परिवारिक दायरों में हीं बांध कर रखने का रिवाज चला आ रहा है, वहां उमंग के इस पहल के कारण जब किशोरियां कभी ब्लॉक ऑफिस में BDO के सामने या कभी अपने ही गाँव के लगभग सैकड़ों ग्रामीणों के सामने किशोरों के साथ कंधे से कन्धा मिलाकर अपने अधिकार और समानता की मांग को नाटक के माध्यम से प्रस्तुत किया, तो वह नजारा देखने लायक था।

नाला ब्लॉक के कालीपहाड़ी गाँव से आयी हुई किशोरी ब्रिस्टी बाउरी का कहना था, पहले दिन तो हम सब डरे डरे थे की क्या बोले, कैसे बोले, लेकिन जैसे जैसे कार्यशाला बढ़ता गया डर ख़तम होने लगी और हिम्मत बढ़ने लगी और आज जब गाँव के इतने सारे लोगों के सामने मैंने अभिनय किया और सभी ने तालियां बजाकर हमें उत्साहित किया तब यकिन हुआ की ''हाँ, हम भी किसी से कम नहीं''।

इस पुरे कार्यशाला का संचालन उमंग के सहभागी संस्था बांग्ला नाटक डॉट कॉम के निपुण संचालन में किया गया।

अंत में यह कहना आवश्यक हैं की उमंग ने सिर्फ कुछ कार्यशाला या गावों में एक नाटक का मंचन करके ही इस अनोखे कार्यक्रम का समाप्ति योजना नहीं बनाया, उमंग का उद्देश्य हैं जिन प्रतिभाओं तथा आवाजों को हमने कार्यशाला के दौरान तराशा और तैयार किया वह आगे भी अपने कला और पारदर्शिता का प्रयोग करते रहे, इसीलिए इस कार्यशाला के 15 और 30 दिन बाद प्रशिक्षक दोबारा प्रतिभागियों के गाँवों में जाकर उनके साथ पूर्वाभ्यास कर उनके द्वारा उसी नाटक का मंचन दुबारा करवाएंगे ताकि आगे वे अपने कला माधयम का प्रयोग तथा समाज में अपने बातों को रखने का बुलंद प्रयास जारी रख पाए।

स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) की ताकत और प्रभाव

जूटकी देवी एक स्वयं सहायता समूह (एस.एच.जी.) की सदस्य हैं और नियमित रूप से उमंग सत्र में भाग लेती हैं। गरीबी के कारण उन्हें अपनी बड़ी बेटी की शादी 14 साल की छोटी उम्र में करनी पड़ी थी। अब उनके पति छोटी बेटी (उषा) की भी शादी करने की जिद कर रहे है। जूटकी जानती है कि उसकी बेटी पुलिस अफसर बनना चाहती है, और अगर उसकी शादी हो गई तो यह संभव नहीं होगा। जूटकी गरीबी के कारण अपने पति को मनाने में असमर्थ है। एस.एच.जी. सदस्यों से जब उन्होंने उसके घर जाने और उसके पति को मनाने का फैसला किया तो एस.एच.जी. सदस्यों ने जूटकी और उनके पति से मुलाकात की और उषा की शिक्षा जारी रखने के लिए जोर दिया ताकि वह अपनी आकांक्षाओं को पूरा कर सके। एस.एच.जी. सदस्यों ने उषा के माता–पिता को याद दिलाया कि 18 साल से पहले लड़कियों की शादी करना कानूनी अपराध है। एस.एच.जी. सदस्यों ने इस बात पर भी जोर दिया कि जल्दी शादी होने पर उषा एक आत्म–निर्भर महिला नहीं बन पाएगी, उसके पास निर्णय लेने की क्षमता की कमी होगी और यह उसके और उसके भविष्य के परिवार की समग्र भलाई को प्रभावित कर सकता है। वह पर्याप्त शैक्षणिक योग्यता के बिना पुलिस अधिकारी बनने के अपने सपने को पूरा नहीं कर पाएगी। एस.एच.जी. सदस्यों के सामाजिक दबाव ने उषा की शादी को रद्द करना सुनिश्चित किया। आज उषा वर्तमान में दसवीं कक्षा में पढ़ रही है और अपने सपनों को साकार करने की कोशिश कर रही है।

अपने आप को कोविड से सुरक्षित रखें, इन चार चीजों का हमेशा ध्यान रखें

हमेशा मास्क पहनें

बार–बार साबुन से हाथ धोएं

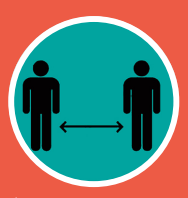

आपस में दो मीटर की दूरी बनाए रखें

वैक्सीन के दोनों डोज अवश्य लगवाएँ

स्टेनसिला की कहानी

''चुनौतियां तो आती रहती हैं, लेकिन मैं हारूंगी नहीं''

इस जज़्बे ने दुमका जिले के एक छोटे से गाँव की एक आम किशोरी को आज पंचायत मुखिया बना दिया।

स्टेनसिला की शादी उसकी इंटर की परीक्षा से पहले ही हो चुकी थी। इसके बावजूद स्टेनसिला को विश्वास था वह कुछ भी कर सकती है। ससुराल जाकर भी उसने अपनी पढ़ाई जारी रखी और आज स्टेनसिला ग्रेजुएट है। उसने पहले बालवाड़ी में, फिर किशोरी क्लब में और फिर JSLPS में महिलाओं के साथ नौकरी की। समाज में महिलाओं के साथ और किशोरी और बच्चियों के साथ मिलने जुलने से वह महसूस करने लगी कि समाज में उनके साथ होने वाले भेदभाव हर तरफ हैं, चाहे वह पारिवारिक क्षेत्र हो या फिर सामाजिक। तभी से उनके लिए कुछ करने की इच्छा उसमे जागने लगी और जब उसने किशोरियों की शिक्षा और जेंडर आधारित भेदभाव पर उमंग परियोजना में काम करना शुरू किया, उसे जमीनी स्तर पर काम करने का मौका मिला। स्टेनसिला ने यह समझ लिया कि प्रशिक्षण और समझ के साथ साथ व्यवस्थागत सहायता भी आवश्यक है। किशोरियों को स्कूल भेजने के साथ साथ उनके पोषण, सामाजिक और पारिवारिक स्थिति, स्वास्थ और दूसरे मुद्दों पर भी काम करना आवश्यक हैं। स्टेनसिला वर्ष 2019 में उमंग कार्यक्रम से जुड़ी, लेकिन उमंग की सहभागी संस्था बदलाव फाउंडेशन से वह 2009 से जुड़ी हुई थी।

उमंग की कुछ गतिविधि जो सिर्फ पुरुषों के साथ की जाती है, उस से जुड़ स्टेनसिला को जेंडर आधारित भेदभाव का एहसास और भी ज्यादा होने लगा, और इसीलिए उसने मुखिया चुनाव में खड़े होने का निर्णय लिया।

स्टेनसिला उमंग से लिए हुए प्रशिक्षण और लगातार सहयोग की मदद से अब आत्मविश्वास से बोलने लगी है, और यह आत्मविशवास उसके चुनाव प्रचार के दौरान उसके प्रतिद्वन्द्वी के मौखिक वारों के जवाब देने में काम आया।

जहाँ अभी भी हम समाज में लड़कियों की भागीदारी को पूरी तरह सुनिश्चित नहीं कर पाए हैं, वहां स्टेनसिला ने 8 पुरुष उम्मीदवारों को हरा कर मुखिया के पद को हासिल किया और महिला सशक्तिकरण का एक गौरान्वित अध्याय आरम्भ किया। स्टेनसिला इन दिनों बहुत व्यस्त है क्यूंकि वह जानती है सिर्फ मुखिया होना ही काफी नहीं है, जरुरी है अपने गाँव की सही मायनों में मुखिया बनना, जो अपने गांव के लिए देखे सपनों को साकार कर सके और ''मैं लड़की हूँ और मै सब कुछ कर सकती हूँ,'' इन शब्दों को सच साबित कर दिखाए।

पिंकी की कहानी

मेरी उम्र 13 वर्ष है। मैं क्लास 6 की छात्रा हूँ। मैं उत्क्रमित मध्य विद्यालय लंगडाडीह में पढ़ती थी। मैं नियमित रूप से होने वाले उमँग सत्र में भाग लेती हूँ। मुझे पढने की प्रबल इच्छा है और मैं पढ़ लिखकर शिक्षिका बनाना चाहती हूँ, ये मेरा सपना है, लेकिन अचानक ही एकदिन मेरे पिता ने मुझसे कहा की ''अब हम तुमको आगे नहीं पढ़ा सकेंगे'' और जब मैंने अपने पिता से इस सन्दर्भ में बात की, तो उन्होंने सीताराम जी, जो एक बैंक कर्मचारी हैं, उनका नाम लिया और कहा की, मै उनके साथ उनके घर देवघर में रहकर पढाई भी करूँ और उनके घर का काम भी, जिससे कुछ पैसे भी मिलेंगे। ये सोचकर मैं सीताराम जी के यहाँ जाने को तैयार हो गयी।

लेकिन उनके घर पहुँचकर पता चला की वो हमें पढ़ने नहीं बल्कि अपने घर में काम करवाने लाये हैं। उन्होंने मुझसे कहा मैंने तुम्हारे काम के बदले में तुम्हारे पिताजी को पैसा देने का वादा किया है। मै उदास हो गई। दूसरे दिन पास की एक लड़की को मैने ये बात बताई। उसने 1098 पर फोन किया।

कुछ समय बाद कुछ पुलिस आई और हमको एक जगह (चाइल्ड केयर सेंटर) ले जाया गया। वहां पर पिता जी को बुलाया गया। यहाँ उमंग के सर भी आ गए। बातचीत के बाद मुझे उमंग की टीम के सामने अपने पिता जी को सौंप दिया गया। सुबह उमंग के सर फिर हमारे घर आये और मेरे माँ पिताजी को समझाकर मुझे पढने हेतु अनुमति दिलवाई। बैठक के दौरान ही उमंग के कार्यकर्ता ने कस्तूरबा विद्यालय में मेरे नामांकन हेतु फोन पर बात की तथा मेरी माँ को वहां ले जाकर नामांकन करवाने हेतु राजी किया। मेरा नामांकन अब कस्तूरबा में हो रहा है। अब मैं काफी खुश हूँ क्योंकि मुझे लगता है की मै अपना सपना पूरा कर पाऊँगी। उमँग से मिली सीख एवं सहयोग के लिए धन्यवाद।

पिंकी कुमारी

उमंग के साथ...

मै शुरुवात में उमंग परियोजना के तहत पुरुषों के साथ होनेवाली चर्चा में भाग लेना समय की बरबादी समझता था, परन्तु जब मैंने अपने दोस्तों के साथ कई बार चर्चा में भाग लिया तो मेरी रुचि जगी और चर्चा की बातों पर मैं विचार करने लगा, आगे क्या चर्चा होगी इस पर भी उत्सुकता बढ़ी। ग्रुप के लगभग सभी सदस्यों का चर्चा में दिलचस्पी भी बढ़ा, क्योंकि बैठक के दौरान होनेवाली चर्चा हमारे जीवन के कई पहलुओ से जुड़ी हुई होती है। हमने कभी सोचा ही नहीं कि किस तरह हम सब जाने अनजाने में अपने ही घर में एवं अन्य किशोरियों के साथ जेंडर आधारित भेदभाव के कारण उनकी आकांक्षायें एव सपनों को सीमित कर देते है या उनके सपनों को मार देते है।

जिसे हम मनोरंजन समझते थे, उससे लड़कियों के ऊपर क्या गुजरती है, इसका अहसास इस चर्चा के बाद हुआ। हम अपने आप पर सोचने पर मजबूर हुए। हमारे ग्रुप के लगभग सभी सदस्य अब गाँव के अन्य लोगों के साथ सत्र में की गयी बातों पर नियमित तौर पर चर्चा करते हैं, जिससे कई बदलाव भी दिखाई दे रहे हैं, जैसे लाइब्रेरी में अब लड़के एवं लड़कियों का समय बराबर निर्धारित कर दिया गया है, अब गाँव के सभी इवैंट में लड़कियों को रोल केवल भाग लेने तक सीमित नहीं है, बल्कि पूरे प्रोग्राम मैनेजमेंट में उनकी भागीदारी होती है।

हमारे ग्रुप ने निश्चय किया है कि पढ़ने में कमजोर लड़कियों को निःशुल्क किताबें उपलब्ध करवाई जाएगी एवं पढ़ाया जाएगा। मै तो अब माँ की बातों पर ध्यान दिये बिना घर में माँ का पूरा सहयोग कर रहा हूँ, और शादी के बाद पत्नी का भी सहयोग करूंगा। मै तो कहता हूँ कि गाँव के बड़े–बुजुर्गो के साथ इस तरह की बैठक और चर्चा नियमित रूप से की जानी चाहिए, जिससे तेजी से सार्थक बदलाव हो। यह पहल सिर्फ चर्चा तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिए। इसके लिए गाँव में जिस तरह लाइब्रेरी एवं खेलकूद की व्यवसथा की गयी, उसी तरह किशोरियो को सशक्त बनाने के लिए पंचायत के बजट में किशोरियों की जरूरतों का प्रावधान होना चाहिए।

सराफत अंसारी
उम्रः 32, गाँव : खैरा, प्रखंडः नाला

सबको दिया सम्मान बराबरी की यही पहचान

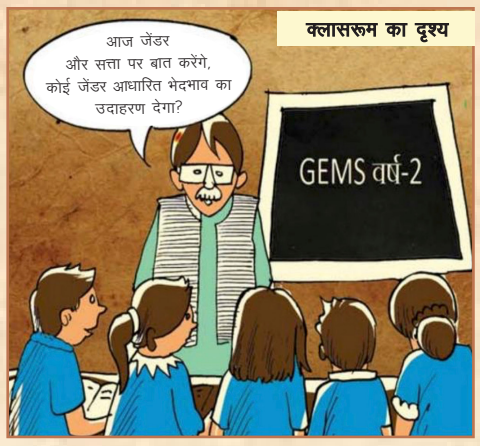

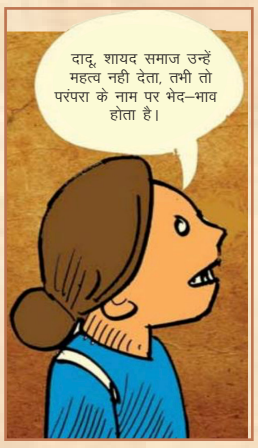

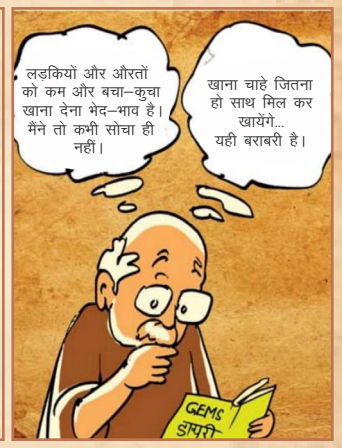

इन कहानियों को एनीमेशन में देखने के लिए ICRW कि वेबसाइट और you tube चैनल को देखें :

https://www.youtube.com/playlist?list=PLXtsQw2ZZq3BGSReTdCEUrvPRmQiFa2u

आभार

उमंग कार्यक्रम के समर्थन के लिए हम आईकीया (IKEA) फॉउण्डेशन के आभारी हैं।
इस पत्रिका की रचना और प्रसार में अपने स्थानीय भागीदारों – साथी (गोड्डा), प्रोजेक्ट कंसर्न इंटरनेशनल एवं बदलाव फॉउण्डेशन (जामताड़ा) – के सहयोग लिए हम उन्हें धन्यवाद देते हैं।
उमंग वाणी की कल्पना और लेखन में उमंग टीम के इन सदस्यों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है – **आई.सी.आर.डब्लयू. –** डॉ. रवि वर्मा, अमाजित मुखर्जी, प्रणीता अच्युत, डॉ. नसरीन जमाल, राजेन्द्र सिंह, पारस वर्मा, नलिनी वी खुराना, बिनीत झा, त्रिलोकी नाथ, शक्ति घोष, नित्या अग्रवाल, **प्रोजेक्ट कंसर्न इंटरनेशनल –** अंकिता कशिश, नवाब परवेज, पूनम कुमारी, संजीव सिंह, अनीता कुमारी, शालिनी कुमारी, **साथी –** हेमकांत मुर्मू, बिभाष झा, सुबोध माझी, **बदलाव फॉउण्डेशन –** अरविन्द कुमार, देबाशीष दास, जहूर अंसारी। **बांगला नाटक डॉट कॉम –** अनन्या भट्टाचार्य, अभिष्पा घोष, सुमन दास।

इस न्यूज़लेटर के बारे में जानकारी के लिए इन्हें संपर्क करें –

संपर्क व्यक्ति	संस्था का नाम	मोबाइल नंबर
डॉ. नसरीन जमाल	आई.सी.आर.डब्लयू.	9431391359
सुश्मिता मुखर्जी	पी. सी. आई.	8920132942
हेमकांत मुर्मू	साथी	6203088294
अरविन्द कुमार	बदलाव फॉउण्डेशन	8210932507

ICRW INTERNATIONAL CENTER FOR RESEARCH ON WOMEN PASSION. PROOF. POWER.
SATHEE साथी
BADLAO FOUNDATION INITIATIVE FOR CHANGE
PCI A Global Communities Partner
banglanatak.com CONTACT BASE

ICRW Ranchi Office:
405, 4th Floor, Krishna Mall, Ashok Nagar,
Between Road No. 1&2, Opposite Central GST Office,
Ranchi - Jharkhand - 834002
Tel. - 0651-2244416/2244417

ICRW Asia Regional Office:
International Center for Research on Women (ICRW)
Module No 410, Fourth Floor, NSIC Business Park Building
Okhla Industrial Estate, New Delhi – 110020, India
Tel - +91.11.46643333 I Fax : 91-11-2463.5142
Email : Info.india@icrw.org

Design By:
Inzenius Consultancy Services Pvt. Ltd./2022/07